जेम रंग लिए रे ममोलो, मेह बूठे तत्काल।
तमने मले हूं रंग एम लऊं, इंद्रावती ना आधार।। १८ ।।

हे वालाजी! मेघ की बूंदें पड़ते ही बीर बहूटी (गौरी गायें-गोकल गायें) जैसे मखमल की तरह लाल रंग की हो जाती है। आपके मिलने पर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं भी ऐसे ही लाल रंग ले लूंगी (लाल हो जाऊंगी)।

इंद्रावती आयत करे, मलवाने उलास।
एणे वचने वालोजी तेडसे, जइ करसूं वालाजी सों विलास।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी मन में उमंग भर मिलने की चाहना से कहती हैं कि इन वचनों से वालाजी बुला लेंगे और मैं जाकर वालाजी से आनन्द करूंगी।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ७० ।।

।। रुत वसंतनी (फागुन-चैत) ।।

राग वसंत

रुतडी आवी रे मारा वाला, वसंत रुत रलियामणी।
तम विना मारा धणी धामना, लागे अलखामणी।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! बड़ी मनभावनी बसन्त ऋतु आई है, किन्तु आपके बिना दु:खदाई लगती है।

तमे पडदा पाछा कीधां पछी, वली आवी ते आ वसंत।
ते पछी तमसूं रमवानी, लागी छे खरी मूने खंत।। २ ।।

आपने मुंह पर पर्दा कर लिया था (प्रणाम स्वीकार नहीं किया)। उसके बाद फिर यह बसन्त ऋतु आई है। इस ऋतु में आपसे खेलने की मुझे बड़ी चाहना है।

हवे ततखिण तेडजो मारा वाला, आ रुत एकला न जाय।
धणी विना कामनी घणूं कलपे, रोता ते वाणू वाय।। ३ ।।

हे मेरे धनी! अब आप तुरन्त बुलाना जिससे यह ऋतु भी अकेले न बीते। पति के बिना पत्नी बिलख-बिलख कर रोती है और रोते-रोते सवेरा होता है।

दिन दोहेला जाय घणूं मूने, वली वसेके वसंत।
ते तमे जाणो छो मारा वाला, जे विध जीव ने वहंत।। ४ ।।

मेरे खास कर यह बसन्त ऋतु के दिन बड़ी कठिनाई से बीत रहे हैं। हे मेरे वालाजी! मेरा जीव जिस तरह से सहन कर रहा है, उसे आप अच्छी तरह से जानते हैं।

रुत मांहें रुत वसंत घणूं रूडी, जेमा मौरे वनराय।
विध विधना रंग लेरे वेलडियो, वनतणे कंठडे वलाय।। ५ ।।

सभी मौसमों में बसन्त का मौसम सर्वश्रेष्ठ है। जिसमें सम्पूर्ण वन कोपल छोड़ता है और बेलें पेड़ों से लिपटी हुई तहर-तरह के रंगों से सजती हैं।

एणी रुते एकलडी मूने, केम मूको छो प्राणनाथ।
जीव सकोमल कूपल मेले, रमवा स्यामलियाने साथ।। ६ ।।

हे मेरे प्राणनाथ! इस ऋतु में मुझे अकेला क्यों छोड़ते हो? मेरा जीव भी इसी तरह छोटी-छोटी कोंपल आपके साथ खेलने से छोड़ेगा।

अमृत वा वाए वसंतनो, लेहेरो लिए वनराय।
ए रुत देखी जीवन विना, ते मारे जीवे न खमाय।।७।।

बसन्त ऋतु में अमृत के समान हवा बहती है जिससे वन मस्ती में झूमते हैं। ऐसी मस्त ऋतु को देखकर प्रीतम के बिना मेरे जीव से सहन नहीं होता है।

हवे केही विध करूं रे वाला, तमे कां थया मोसूं एम।
मूने मेली एकलडी, तमे बेससो करारे केम।।८।।

हे वालाजी! आप मेरे से ऐसे क्यों हो गए हैं? अब मैं क्या करूं? मुझे अकेली छोड़कर क्या आप चैन से बैठ सकोगे?

जो अनेक अवगुण होय मारा, तोहे तमे लेसो सार।
अमे कलपतां तमे दुखासो, ते नेहेचे जाणो निरधार।।९।।

मेरे अन्दर अनेक अवगुण भी होंगे, तो भी आप मेरी सुध लोगे। मुझे कलपता हुआ देखकर आप भी दुःखी होओगे। यह बात आप भी निश्चित ही जानें।

में मारा करम भोगवतां, दीठां ते दुख अति घणां।
पण मारा दुख देखी तमे दुखाणा, मूने ते दुख साले तम तणां।।१०।।

मैंने अपने किये कर्मों के भोगने में अत्यन्त दुःख देखे हैं। मेरे दुःखों को देखकर आप दुःखी हुए, उसकी मुझे ज्यादा चिन्ता है।

साथ मांहें आवी मारा वाला, अंतराय कीधी मोसूं एह।
आकार तमारो अम समोजी, दुख सुख देखे देह।।११।।

हे मेरे वालाजी! आपने सुन्दरसाथ के बीच में आकर मुझसे इस प्रकार का पर्दा किया है। शरीर तुम्हारा भी हमारे जैसा (समान) है। यह दुःख और सुख तो यह शरीर ही देखता है।

अंतरगत आवी मारा वाला, बेठा छो आकार मांहें।
आकार देह धर्युं मायानूं, ते माटे कोणे न ओलखाए।।१२।।

हे वालाजी! आप भी हमारे जैसे ही आकार (तन) धारण करके बैठे हो। चूंकि आपने माया का तन धारण किया है, इसलिए आपको कोई भी पहचान नहीं पाता।

ए आकार धरी अम मांहें, बेठा छो अंतरीख।
पण केम छाना रहो तमे अम थी, अमे तमारा सरीख।।१३।।

ऐसा तन धारण करके आप हमारे बीच छिपे बैठे हो। आप हमसे कैसे छिपे रहोगे? हम भी तो आपके ही समान हैं।

हवे में तमने दीठा जुगते, ओलखिया आधार।
ते माटे तमे तेडजो ततखिण, मलो तो थाय करार।।१४।।

अब मैंने आपको अच्छी तरह जान लिया है और पहचान लिया है। इसलिए, हे वालाजी! आप तुरन्त ही मुझे बुलाओ, जिससे आपसे मिलकर मुझे शान्ति मिल जाए।

हुतासनी नो ओछव अति रूडो, आवी रमूं अबीर गुलाल।
चोवा चंदन अनेक अरगजा, हूं छांटी करूं वालाजीने लाल।। १५ ।।

होली का उत्सव बहुत ही अच्छा है। मैं आकर अबीर और गुलाल के साथ आपसे खेलूंगी। सुन्दर सुगन्धित तेल, चन्दन, इत्र छिड़क-छिड़क कर हे वालाजी! मैं आपको लाल कर दूंगी।

सुंदरसाथ मलीने रमिए, वालाजीसूं रंग अपार।
लोपी लाज रमूं हूं तमसूं, इंद्रावतीना आधार।। १६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! हम सब मिलकर अपने वालाजी के साथ बड़ी उमंग से खेलें। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे मेरे प्रीतम! मैं लोक लज्जा छोड़कर आपके साथ होली खेलूंगी।

हवे वेहेली ते तेडो मारा वाला, रमवा हरख न माय।
सुंदर धणी मारा रे तमने, हूं आवीने जीतूं तेणे ताय।। १७ ।।

हे मेरे वालाजी! मुझे तुरन्त बुलाओ। मेरे मन में खेलने की उमंग समाती नहीं है। हे मेरे सुन्दर धनी! मैं आकर आपको उसी समय जीत लूंगी।

इंद्रावती अरधांग तमारी, कलपे विना धणी धाम।
एणे वचने ततखिण मूने तेडसे, मलीने भाजीस मारी हांम।। १८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं आपकी अंगना हूं और आपके बिना बिलख रही हूं। यह वचन सुनकर मुझे धनी तुरन्त बुलाएंगे, तो मैं मिलकर अपने मन की तड़प (चाहना) मिटाऊंगी।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ८८ ॥

॥ गरमी रुत (वैसाख–जेठ) ॥

राग काफी धमार

वालाजी विना रुत ग्रीखम हो।। टेक ।।

रुत ग्रीखम वालाजी विना रे, घणूं दोहेली जाय।
पिउजी विना हूं एकली, खिण वरसां सो थाय।। १ ।।

वालाजी के बिना यह गर्मी की ऋतु बड़ी कठिनाई से बीतती है। प्रीतम के बिना मैं अकेली हूं और एक पल सौ वर्ष के समान लग रहा है।

ग्रीखमनी रुत आवी रे वाला, वेलडियो सोहे वनराय।
फूल फल दीसे रे अति उत्तम, एणी रुते वन सोहाय।। २ ।।

हे वालाजी! गरमी की ऋतु आई है। वेलें और वन सब मनमोहक हो गए हैं। फल और फूलों से सजे हुए वन शोभा देते हैं।

घाटी छाह्या सोहे वननी, फूलडे रंग प्रेमल अपार।
एणी रुते मारा वालैया, मूने तेडीने रमजो आधार।। ३ ।।

वन की गहरी छाया है। फूलों की सुगन्ध अपार है। इसलिए, हे प्रीतम! मुझे बुलाकर मेरे साथ खेलो।